।। श्री वीतरागाय नम: ।।

AmamYZm Hob$gwZ

›

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति,
साहित्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108
विशद सागर जी महाराज

कृति – **आराधना के सुमन**

रचयिता – **प.पू.क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – प्रथम, नवम्बर, 2009

प्रतियाँ – 1000

संपादन – मुनि 108 श्री विशाल सागर, क्षु. 105 श्री विदर्श सागर महाराज, ब्र. लालजी भैया, ब्र. सुखनन्दनजी

संकलन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी, 9829076085

संयोजन – ब्र.सोनू, किरण, आरती दीदी, 9829127533

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मल कुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर. मो.:9414812008 फोन : 3294018 (आ.)

2. श्री 108 आचार्य विशद सागर माध्यमिक विद्यालय, बरौदियाकलां, जिला–सागर (म.प्र.), 07581–274244

3. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर, फोन : 9414016566

4. श्री सरस्वती प्रिन्टर्स, जयपुर. मो. 9983461656

-: Adga :-

na_nyÁ`j_m_y{V©AmMm`©lr 108 {deXgmJaOr _hmamO Ho$

सत्रहवें ऐलक दीक्षा दिवस

Ho$ Adga na gmXa Z_Z2

{XZm§H$ 18 {Xgå~a, 1993

मुद्रक – amO y Jm{\H AmQ>©(gS>mnemh), O`nwa
\$moZ : 2363339, _mo.: 9829050791

पुनः प्रकाशन सहयोग – मात्र 41.00 रूपये

मेरे उद्गार

भारतीय श्रमण परम्परा का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना सृष्टि का निर्माण। पंचम काल के अंत तक यह श्रमण परम्परा इसी प्रकार अक्षुण्ण बनी रहेगी। जिस दिन साधु का अभाव हो जायेगा उसी दिन से अग्नि, धर्म व राजा का अभाव हो जायेगा।

वर्तमान में शुक्ल ध्यान तो हो नहीं सकता व धर्मध्यान के माध्यम से ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है और मुक्ति प्रभु भक्ति से ही प्राप्त की जा सकती है।

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज ने आज जहाँ भौतिकता की चकाचौंध में मानव पापों में डूबता जा रहा है वहीं हमारे लिए भक्ति का अवसर देकर पुण्यास्रव का अवसर प्रदान किया है। पूज्य आचार्य श्री ने ध्यान की गहराई में उतरकर हमारे लिए सुन्दर, सरस, सरल, अनमोल शब्दरूपी मोती की एक माला में पिरोकर अभिषेक का पद्यानुवाद सहित पूजन संग्रह के रूप में **''आराधना के सुमन''** यह कृति प्रदान की है।

अंत में वीर प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य आचार्यश्री को आरोग्य लाभ हो वे युग–युग तक धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना करते रहें। पू. आचार्य श्री के चरणों में मन–वचन–काय पूर्वक कोटि–कोटि नमन्।

दुःख दर्द भरी आंखों को आंखों से देखना सीखो।
हर इन्सान के अन्दर में, अरमान देखना सीखो।।
पाषाण की प्रतिमा में, भगवान को देखने वालो।
एक बार इन संतों के रूप में, भगवान को देखना सीखो।।

प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण
ब्र. पं. ऋषभकुमार शास्त्री
(संघस्थ - आचार्य देवनन्दिजी महाराज)
फोन : 0712-2769408, 9422145549

~

AZwHk$_{UH$m

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1	दर्शन पाठ	5
2	मंगलाष्टक	6
3	अभिषेक पाठ (भाषा)	8
4	शांतिधारा/लघु शांतिधारा	11
5	विनय पाठ/मंगल पाठ/पूजा पीठिका	15
6	देव-शास्त्र-गुरु पूजन - श्री द्यानतरायजी कृत	23
7	श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)	28
8	अर्घ्यावली	33
9	समुच्चय महार्घ्य	40
10	शांतिपाठ (भाषा)/विसर्जन	41
11	श्री नवदेवता पूजा	45
12	श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन	50
13	श्री आदिनाथ जिन पूजन	54
14	श्री पद्मप्रभु पूजन	60
15	श्री चन्द्रप्रभु पूजन	65
16	श्री शांतिनाथ पूजन	71
17	श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन	77
18	श्री नेमिनाथ जिनपूजा	82
19	श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा	88
20	श्री महावीर स्वामी जिनपूजा	93
21	जिनवाणी पूजन	99
22	महामंत्र णमोकार पूजा	104
23	श्री रविव्रत पूजा	109
24	श्री बाहुबली पूजा	113
25	रक्षाबन्धन पर्व पूजा	118
26	प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की पूजन	124
27	प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा	128
28	चौबीस जिन की आरती	131
29	श्री आदिनाथ भगवान की आरती	132
30	श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती	133
31	श्री नवदेवता की आरती	133
32	महावीर भगवान की आरती	134
33	आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती	135
34	आचार्य श्री विशदसागरजी द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची	136

दर्शन पाठ

(तर्ज : दिन रात मेरे स्वामी...)

यह भावना हमारी, प्रभु दर्श तेरे पाऊँ।
पल-पल प्रसन्न मन से, नवकार मंत्र ध्याऊँ।।
चउ घातिया करम का, जिसने किया सफाया।
अपने हृदय कमल पर, अर्हंत को बसाऊँ।। यह भावना...

नो कर्म भाव द्रव्य से, जो मुक्त हो गये हैं।
उन शुद्ध सिद्ध जिन को, मैं शीष पर बिठाऊँ।। यह भावना...

आचार पाँच पालें, पालन कराएँ सबको।
आचार्य परम गुरु को, मैं कंठ में सजाऊँ।। यह भावना...

जो अंग पूर्वधारी, पढ़ते मुनि पढ़ाते।
मुख के कमल बिठाकर, उनके गुणों को गाऊँ।। यह भावना...

सद्ज्ञान ध्यान तप में, खोये सदैव रहते।
उन सर्वसाधुओं को, नाभि कमल में ध्याऊँ ।। यह भावना...

श्रद्धान, ज्ञान, चारित, सद्धर्म ये रतन हैं।
अहिंसा मयी धरम के, धारण में लौ लगाऊँ।। यह भावना...

वाणी जिनेन्द्र की शुभ, हितकारणी कही है।
जिनदेव की सुवाणी करके, श्रवण कराऊँ।। यह भावना...

जिन का स्वरूप जिनके, प्रतिबिम्ब में झलकता।
जिन तीर्थ वंदना कर, नित चैत्य दर्श पाऊँ।। यह भावना...

त्रैलोक्य में विराजित, जिन चैत्य अरु जिनालय।
तन, मन 'विशद' वचन से, मैं वंदना को जाऊँ।। यह भावना...

इत्याशीर्वादः

मंगलाष्टक

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के मात-पिता यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

अभिषेक पाठ (भाषा)

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा का शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नम: नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धी शाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेर के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरू, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणि में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धी वान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णतो धम्मो लोगत्तमा।

चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरिहंते शरणं पव्वज्जामि सिद्धेशरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं किरिटिं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षाः क्षः वाः वः हूं फट् सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रौं सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप विनाशाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्त्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्त्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामंडल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रतिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्ट मंडन मंडिताय सर्व विघ्न शान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

तव भक्ति प्रसादालक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोपद्रव दारिद्रयोद्भवोपद्रव स्वचक्र परचक्रोद्भयोपद्रव प्रचंड पवनालन जलोद्भयोपद्रव शाकिनी डाकिनी भूत पिशाच कृतोपद्रव दुर्भिक्षव्यापार वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु सर्वेषां पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु श्री सद्धर्मवलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि रस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संपूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु।

इत्याशीर्वादः

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु। ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्रहहॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ हां हीं हूं हौं हः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।
अर्घहह **उदक चन्दन....... जिन-नाथ-महं यजे।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघन रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्-शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
भाई बीज पुण्य का बोवे। ...

अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
भाई जीवन सफल बनावें। ...

अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो पुण्य की राशी। ...

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो सदा विश्वासी। ...

परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
भाई गुण गाके हर्षाया। ...

मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
भाई आतम ज्ञान प्रकाशी।। ...

विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।
जिनेश्वर की शरण जो आवें।। ...

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए विशद होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धि भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादि का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादि की, करता हूँ पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया मैंने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नि में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करूँ हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतल नाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द तांटक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मन: पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पादानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।4।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणि फल, जल तन्तु हों पुष्प महान।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धि, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धि, विडौषधि मल्लौषधि जान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्।। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।)

देव-शास्त्र-गुरु पूजन

(कवि द्यानतराय कृत) अडिल्ल छंद

प्रथम देव अरिहन्त सुश्रुत सिद्धांत जू।
गुरु निर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुर पंथ जू।।
तीन रतन जग माहिं सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइये।।1।।

पूजों पद अरिहन्त के, पूजों गुरु पद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्जवल देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु, निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योः संसार-ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

यह भव-समुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अती दृढ़ परम पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत, गुरु निर्ग्रन्थ नितपूजा रचूँ।।

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जे विनयवंत सुभव्य उर, अम्बुज प्रकाशन भान है।
जे एक मुख चारित्र भाषित, त्रिजग माहिं प्रधान है।।
लहि कुंद कमलादिक पहुँप, भव-भव कुवेदन सो बचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्योः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

अति सबल मद-कंदर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सु गरुड़ समान है।।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत, गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

नाना विधि संयुक्तरस, व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

जे त्रिजग–उद्यम नाश किने, मोह–तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप, प्रकाश ज्योति प्रभावली।।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन, के सुभाजन में खचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत, गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

स्वपर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

जो कर्म–ईंधन दहन अग्नि, समूह सम उद्धत लसें।
वरधूप तासु सुगंधताकरि, सकल परिमलता हँसे।।
इह भांति धूप चढ़ाय नित, भवज्वलन माहीं नहिं पचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत, गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

अग्नि माहिं परिमल दहन, चन्दनादि गुणलीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

लोचन सु रसना घ्राण उर, उत्साह के करतार है।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार है।।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।

जे प्रधान फल फल विषैं, पञ्चकरण रस लीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो: मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूँ।।
इहि भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिव पंकति मचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु–निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
आठों दु:खदानी, आठ निशानी, तुम ढिग आन निवारन हो।
दीनन निस्तारन अधम उधारन 'द्यानत' तारन कारन हो।।
प्रभु अन्तर्यामी त्रिभुवननामी, सबके स्वामी दोष हरो।
यह अरज सुनीजे ढील न कीजे, न्याय करी जे दया करो।।

वसुविधि अर्घ संजोय कैं, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

जयमाला

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहूँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार।।1।।

।। पद्धरि छन्द ।।

चौ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परमसुगुण है अनंत धीर, कहवतके छयालिस गुणगंभीर।।2।।

शुभ समवशरण शोभा अपार,शत् इन्द्र नमत कर शीशधार।
देवाधिदेव अरिहंत देव, वन्दों मन-वच-तनकरि सुसेव।।3।।

जिनकी धुनि है ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत।।4।।

सो स्याद्वादमय सप्त भङ्ग, गणधर गूंथे बारह सु अङ्ग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सोशास्त्र नमों बहु प्रीतिल्याय।।5।।

गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध।
संसार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपै शिवपद निहार।।6।।

गुण छत्तिस पच्चिस, आठ बीस, भवतारण तरन जिहाजईस।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मनवचनकाय।।7।।

सोरठा

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै।।8।।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपद प्राप्तये महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व दलन सिद्धान्त साधक, मुक्ति मारग जानिये।
करनी अकरनी सुगति दुर्गति, पुण्य-पाप पिछानिये।।
संसार सागर तरण-तारण, गुरु जिहाज विशेषिये।
जग मांहि गुरुसम कहें 'बनारसि' और न दूजो पेखिये।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आयें, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधि प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।

गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंश करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक तिहूँ काल के, नमूँ सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ

जलफल आठों दर्व अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहू–तैं थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री सीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

कृत्माकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान्,
वन्दे भावन–व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा–वासगान्।।
सद्–गन्धाक्षत–पुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।

सात करोड़ बहत्तर लाख, सु–भवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।।
अब लखचौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत–गणैः, सङ्गं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत–चयं, रम्यं चरुं दीपकम्।

धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।
श्री आदिनाथजी के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे ! करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाँय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द्र, चरनन चंद लगै,
मन– वच– तन जजत अमंद, आतम जोति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

जल फलदरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज– तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी।।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतचक्रेशं वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे ! गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ्य

पथ की प्रत्येक विषमता को मैं, समता से स्वीकार करूँ।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को।
वसुद्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद कंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर यती।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम, पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम, भव लोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे ! बाहुबली तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, द्यानत वरत करों मन लाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो!, जय जय नाथ परम गुरु हो!।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरब मय अरघ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करो प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों।
द्यानत कीज्यो शिव खेत, भूमि समरपतु हों।।
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पुंज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंद भाव धरों।।
नंदीश्वर द्वीप महान्, चारों दिशि सोहें।
बावन जिन मंदिर जान, सुर नर मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरब संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दस लच्छन पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मांङ्गाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठ दरब निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ्य

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चा.च. प.पू. आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी महाराज का अर्घ्य

पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतु, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें हम शांति पाने आये हैं।
विशद भाव से पद पंकज में अपना शीष झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चा.च. आचार्य 108 श्री शांतिसागर यतिवेरभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विमलसागरजी महाराज का अर्घ्य

हे ज्ञान मूर्ति ! करुणा निधान, हे धर्म दिवाकर ! करुणा कर ।
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
विमल सिंधु के विमल चरण से, करुणा के झरने झरते ।
गुरु अष्ट गुणों की सिद्धि हेतु, यह अर्घ्य समर्पण हम करते ।।

ॐ ह्रीं सन्मार्ग दिवाकर वात्सल्य रत्नाकर धर्म प्रणेता आचार्य श्री विमलसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश थाल में अक्षत पुष्प सजाये हैं।
चरुवर दीप धूप फल लेकर अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
मन मंदिर में मेरे गुरुवर हमने तुम्हें बसाया है।
विराग सिन्धु के श्री चरणों में अपना शीश झुकाया है।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बालयति प.पू. आचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री भरतसागरजी महाराज का अर्घ्य

जल चन्दन के कलश मनोहर अक्षत पुष्प चरु लाये।
दीप धूप अरु फल को लेकर अर्घ्य चढ़ाने हम आये ।
हृदय कमल में राजें गुरुवर सुन्दर सुमन बिछाते है।
भरत सिंधु के श्री चरणों में सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं बालयोगी प्रशान्त मूर्ति आचार्य 108 श्री भरतसागर यतिवरेभ्यो: अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रीं क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी मुनीन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।1।।

अर्हन्त-भाषित वैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।

त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसुजय, होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यपूजा, भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करै करावैं भावना भावैं श्री अरहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी, पंचपरमेष्ठिभ्यो नम: प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नम:। दर्शन-विशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नम:। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नम:। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नम:। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-

नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक, मध्य लोक, पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर मालपुरा आदिनाथ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे ...... देश...... प्रान्ते...... नाम्नि नगरे...... मासानामुत्तमे ...... मासे शुभ पक्षे ...... तिथौ ...... वासरे ...... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वर्षा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

बसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा–प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,
कीजे सुखी हे जिन ! शांति को दे।।6।।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समै पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।।7।।

दोहा – **घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।**
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

अथेष्टक प्रार्थना

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकू सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौलों न पाऊं।।1।।

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम् हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने ।।10।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से ।।11।।
हे जगबन्धु ! जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का, क्षय हो सुबोध सुखकारी ।।12।।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करों मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा वत भवसागर तरुं।।
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।
जिनपूजा तैं सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रमतैं पावे निर्वाण।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

दोहा – सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावें मोक्ष निदान।।

जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारागण होय।।
नाथ तिहारे नामते, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखो भगवान।।
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको, भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।

आये जो–जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान।।4।।

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव–भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय।।1।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता नंद छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम् ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान ।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन् ।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने लक्ष्य बनाया है ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं ।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं ।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गति भटकाते हैं।।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
वह क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में प्राणी अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।

अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते है।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुःख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।
सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन।।
स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभ वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।

मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करूँ नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन।।
विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहें मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्।।
वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुआ चिन्ह मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन।।
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन।।
वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।

दोहा - चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर विशद, शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगलपरम।
मंगल करें सदैव, सुख शांति आनन्द हो।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।

हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।

जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।

देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पद्मप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र !अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादि के दुःख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।

रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भांति भांति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतु मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांति को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा, हम करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक वदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभु स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।
हम भाव सहित वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मश होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।
तीन योग से प्रभु पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़–जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर–नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय–जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन–जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभु।
जय नित्य निरंजन भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभु ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दु:ख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटका फिरा, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधि का जल ले आया, मैं चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दु:ख अति ही पाए हैं।
हम चउ गति से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दु:ख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतु, धवल अक्षत लाए हैं।।

श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दु:ख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएं मिटी न, व्यंजन अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधि नाश हेतु, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भ्रमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योति उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात हेतु, अग्नि में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतु, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को, सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।
जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्च मुष्टि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल सिद्धशिला पर किया बिहार।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हूँ नत भाल।
गुणमणि माला हेतु मैं, कहता हूँ जयमाल।।

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादि से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धि पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतु, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।
तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।

सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित् चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री शांतिनाथ पूजन

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतिमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तु कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यु दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांति हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।

हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तु सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तु हम काल अनादि से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तु कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।
हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतिमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभु, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतिमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथि सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय–जय कार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय–जय कार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय–जय कार।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय–जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ति होय त्रिकाल।**
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ।।
जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।

प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभु मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांति के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।

शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीष झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांति नाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

आर्या छन्द

शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशक परम शान्ति प्रदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांति मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुःख दारिद्र सब दूर हों।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

शांति से शांति को पा गये शांति जिन।
बीते है शांति से जिंदगी के भी दिन।।
शांति जिनकी मिले शांति से शत् शरण।
द्वय चरण में 'विशद' शांति जिन के नमन्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दनङ्क
मुनिव्रत धारी हे भवतारी !, योगीश्वर जिनवर वन्दन।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, प्रभु करते हैं हम आह्वानङ्क
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करोङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं॥

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांति, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यु आदि विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर, आतम का उत्थान करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ति पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्त्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धि करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँङ्क

शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क8ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँङ्क
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैंङ्क9ङ्क

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
पद्मा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।।
तीन लोक में सर्व महान्, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ, त्याग करूँ जगजाल।**
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमालङ्क

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्, जय किए कर्म की प्रभु हान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीरङ्क
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुःख अपारङ्क
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ, पद झुका रहे सुर नर सुमाथ।
जय पद्मादेवी के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दायङ्क

जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्ङ्क
तन सहस आठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाणङ्क
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भानङ्क
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग, हो गए स्वयं प्रभु वीतरागङ्क
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतरागङ्क
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है वश यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कारङ्क
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेश पायङ्क
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथङ्क

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी, आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारीङ्क

ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, छुटकारा मिलने पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन्, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभु, तुमने सब राग नशाया है।
व्रत संयम तेज तपस्या से, अभिनव अक्षय पद पाया है।।

हो अक्षय पद प्राप्त हमें, हम अक्षय अक्षत लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रबल काम शत्रु जग में, तुमने उसको ठुकराया है।
यह भक्त समर्पित चरणों में, तुमसा बनने को आया है।।
प्रभु कामबाण के नाश हेतु, यह प्रमुदित पुष्प चढ़ाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! भोग की तृष्णा ने, अरु क्षुधा ने हमें सताया है।
मन मर्कट सब पदार्थ खाकर, भी तृप्त नहीं हो पाया है।।
प्रभु क्षुधा रोग के शमन हेतु, यह व्यंजन सरस ले आए हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांध महा अज्ञानी हूँ, जीवन में घोर तिमिर छाया।
मैं रागी द्वेषी बना रहा, निज के स्वभाव से बिसराया।।
मोहांधकार का नाश करूँ, यह दीप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सेना ने कैसा, यह चक्र व्यूह रचवाया है।
मुझ भोले-भाले प्राणी को, क्यों उसके बीच फँसाया है।।
अब अष्ट कर्म की धूप जले, यह धूप जलाने लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चित् चेतन का चिंतन, अरु मनन नहीं कर पाया है।
सद्दर्शन ज्ञान चरित का फल, शुभ फल निर्वाण न पाया है।।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद पाने का प्रभु, हमने अब भाव जगाया है।
अत एव प्रभु वसु द्रव्यों का, अनुपम यह अर्घ्य बनाया है।।
दो पद अनर्घ हमको स्वामी, यह अर्घ्य संजोकर लाए हैं।
राहु अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

नेमिनाथ भगवान, कार्तिक शुक्ला षष्ठमी।
पाए गर्भ कल्याण, शिवा देवी उर आ बसे।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।
ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
शौर्य पुरी नगरी शुभम्, समुद्र विजय हर्षित हुए।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।
ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।

तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप कल्याणक मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ल अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभु का करते हैं, दुःख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।

प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुःख से क्या भय खाते हैं।
वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।

हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।
अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जरा-मृत्यु के संकट से, घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ति हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ता अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल।।1।।
चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।

श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने के लिए, करते चरण प्रणाम्।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर स्वामी जिनपूजा

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

(स्थापना)

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओङ्क
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्!, यह भाव सुमन कर में लाएङ्क
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिएङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान बिसराती हैङ्क
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती हैङ्क
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है।
मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करो
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्त अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती हैङ्क
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो ङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती हैङ्क
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभु निराश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है।
हे प्रभु! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती हैङ्क
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरोङ्क
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क6ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन् , कर्मों की धूप सताती है।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती हैङ्क

यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभु जी वास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क7ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती हैङ्क
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क8ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती हैङ्क
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरोङ्क9ङ्क

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

आषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आएङ्क1ङ्क

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावनङ्क2ङ्क

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तब वैराग्य समाया।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ाङ्क3ङ्क

ॐ ह्रीं मंगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, इन्द्र ने समवशरण बनवायाङ्क4ङ्क

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हे बस।
हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाएङ्क5ङ्क

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्या मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमालङ्क

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाएङ्क

छंद ताटंक

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य कियाङ्क
शत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक कियाङ्क

दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार कियाङ्क
नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओरङ्क
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देशङ्क
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाईङ्क
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौरायाङ्क
हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार-मार चकचूर किया।
अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दियाङ्क
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पञ्च मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किएङ्क
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लियाङ्क
कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दियाङ्क
काम-देव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे में भी हाराङ्क

बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ति करने को आए।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया।
छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।
श्रावण वदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, 'विशद' धर्म का फूल खिला।
कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।

दोहा - महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेषङ्क

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा॥

दोहा - कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करता चरण प्रणामङ्क

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप - **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरभ्यो नमः।**

मेरी जिंदगी तेरे दर पे सम्हल जाए।
मेरे शीश पर तेरा आशीष काम कर जाए।।
आपके होते हुए भी मेरी जिंदगी वीरान क्यों रहे।
मेरी जिंदगी का गुलशन 'विशद' गुलों से भर जाए।।

जिनवाणी पूजन

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

स्थापना

श्री जिनेन्द्र के मुख से खिरती, दिव्य ध्वनि अतिशय पावन।
द्वादश कोठों में सब के हित, ॐकारमय मन भावन।।
द्वादशांग में जिसकी रचना, गणधर करते श्रेष्ठ महान्।
जिनवाणी का विशद हृदय से, करते आज यहाँ आह्वान्।।
हे जिनवाणी माँ ! भव्यों के, अन्तर का अज्ञान हरो।
शरणागत बन आए शरण में, मात शीघ्र कल्याण करो।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

प्रभु भाव रहे मेरे कलुषित, वह शुद्ध नहीं हो पाए हैं।
जल सम निर्मलता पाने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी, को भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या के कारण से हर क्षण, संतापित होते आए हैं।
चंदन समशीतलता पाने, यह चंदन घिसकर लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अखण्ड है सत्य एक, उसको हम जान न पाए हैं।
अब पद अखण्ड अक्षय पाने, यह अक्षत लेकर आए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों के सुख पाने को, हम मोह में फँसते आए हैं।
अब मुक्ति पाने भोगों से, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना के रस को चखने से, तृष्णा ही बढ़ाते आए हैं।
तन-मन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके हैं मोह-तिमिर में हम, अन्तर में झाँक न पाए हैं।
निज ज्ञान दीप जगमग करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप में सदियों से, परवश हो जलते आए हैं।
अब छाया पाने चेतन की, यह धूप जलाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं रत्नत्रय के फल अनुपम, वह फल हमने न पाए हैं।
अब सम्यक् दर्शन के प्रतिफल, पाने फल लेकर आए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ महाशक्ति की पुंज द्रव्य, उससे यह अर्घ्य बनाए हैं।
पाने अनर्घ पद अविनाशी, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिनवर की वाणी जिनवाणी को, भाव सहित हम ध्याते हैं।
जागे अन्तर में ज्ञान विशद, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक निर्मल नीर से, देते हैं त्रय धार।
जीवन सुखमय शांत हो, होवे धर्म प्रचार।।

(शांतये शांतिधारा)

परम सुगंधित पुष्प यह, लेकर अपरम्पार।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल।।

(चाल–टप्पा)

तीर्थंकर की दिव्य देशना, जग में सुखदाई।
लोका–लोक प्रकाशित होता, जिसकी प्रभुताई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...

सम्यक् ज्ञान प्रदायक अनुपम जिनवाणी भाई।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।1।।

सप्त शतक लघु महाभाषाएँ, अष्टादश भाई।
अक्षर और अनक्षर अनुपम, दोय रूप पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।2।।

ॐकारमय खिरे देशना, तीन काल भाई।
गणधर झेला करते जिसको, हिरदय हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।3।।

सप्त तत्त्व छह द्रव्य प्रकाशक, अतिशय सुख दाई।
द्वादशांग में वर्णित पावन, शुभ मंगल दाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।4।।

अंग बाह्य अरु अंग प्रविष्टि, भेद रूप गाई।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद की, महिमा दिखलाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।5।।

आचारांग में पद अष्टादश, सहस्र रहे भाई।
छत्तिस सहस पद सूत्र कृतांग में, जानो सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।6।।

स्थानांग में सहस्र छियालिस, पद संख्या गाई।
समवायांग में लाख सु चौसठ, पद जानो भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।7।।

दोय लाख अट्ठाइस सहस्र, व्याख्या प्रज्ञप्ति गाई।
पाँच लाख छप्पन हजार का, ज्ञातृकथांग भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।8।।

ग्यारह लाख सत्तर हजार का, उपासकांग भाई।
तेईस लाख अट्ठाइस सहस्र का, अन्तःकृत भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।9।।

लक्ष बानवे सहस्र चवालिस, अनुत्तरांग भाई।
सोलह सहस लाख तेरानवे, प्रश्न व्याकरण भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।10।।

एक करोड़ लाख चौरासी, विपाकसूत्र गाई।
चार करोड़ लक्ष पन्द्रह दो, सहस्र हुए भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।11।।

दृष्टिवाद के पंच भेद हैं, अतिशय सुखदाई।
द्रव्य भाव श्रुत दोय रूप में, कहा गया भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।12।।

एक सौ बारह कोटि तिरासी, लक्ष अधिक भाई।
सहसाट्ठावन पञ्च सर्व पद, जिनवाणी गाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई...।।13।।

दोहा– भक्ति भाव से भक्त सब, करते यही पुकार।
माँ जिनवाणी की कृपा, बरसे सदाबहार।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– माँ जिनवाणी सरस्वती, आदि हैं कई नाम।
वन्दन करते भाव से, करके विशद प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

महामंत्र णमोकार पूजा

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि–सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
श्रद्धा भक्ति से जो प्राणी, महामंत्र को ध्याते हैं।
सुख–शांति आनन्द प्राप्त कर, शिव पदवी को पाते हैं।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद–मोतियादाम)

हमने इस तन को धो–धोकर, सदियों से स्वच्छ बनाया है।
किन्तु क्रोधादि कषायों ने, चेतन में दाग लगाया है।।
अब चित् के निर्मल करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का काल अनादि से, पुद्गल से गहरा नाता है।
कर्मों की अग्नि धधक रही, संताप उसी से आता है।।
अब शीतल चंदन अर्पित कर, संताप नशाने आए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड आतम अनुपम, खण्डित पद में रम जाती है।
स्पर्श गंध रस रूप मिले, उनसे मिलकर भटकाती है।
अब अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, अक्षय पद पाने आये हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन काम वासना से वासित, तन कारागृह में रहता है।
आयु के बन्धन में बंधकर, जो दुःख अनेकों सहता है।।
अब काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन किया मगर, नित प्रति भूखे हो जाते हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, न ज्ञानामृत हम पाते हैं।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की आभा के आगे, दिनकर भी शरमा जाता है।
आवरण पड़ा वसु कर्मों का, स्वरूप नहीं दिख पाता है।।

अब मोह अन्ध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तीव्रोदय जब कर्मों का, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
यह जीव शुभाशुभ कर्मों के, फल से सुख-दुःख बहु पाता है।।
अब अष्ट कर्म का यह ईंधन, शुभ आज बनाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर गति में जन्म हुआ मेरा, यह पूर्व पुण्य की माया है।
इसमें भी पाप कमाया है, न मोक्ष महाफल पाया है।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह सरस-सरस फल लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आठ कर्म के ठाठ महा, जीवों को दास बनाते हैं।
मोहित करके सारे जग को, वह बारम्बार नचाते हैं।।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रित कर महामंत्र से, प्रासुक नीर महान्।
शांतिधारा दे रहे, करके हम गुण गान।।

(शांतिधारा......)

पुष्पांजलि को पुष्प यह, पुष्पित लिए महान्।
महामंत्र का जाप कर, करने को गुणगान।।

(पुष्पांजलि......)

जयमाला

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल।।

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ।।
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतीस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ।।
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते।।
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन–जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।।

जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन–जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई ! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।

दोहा– महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

झुकाने को लोग सिर झुकाते है पत्थर के सामने।
श्रद्धावान होकर परमात्मा की भक्ति का फल पाते हैं।।

श्री रविव्रत पूजा

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

स्थापना

हे पार्श्वनाथ ! करुणा निधान, तुमने करुणा का दान दिया।
जो दीन दुःखी हैं इस जग में, उनको शिव सौख्य प्रदान किया।।
इक श्रेष्ठी रत्न मतिसागर ने, भक्ति का फल पाया है।
रविवार का व्रत करके शुभ, निज सौभाग्य जगाया है।।
हम भाव सहित प्रभु गुण गाते, अरु पद में करते हैं अर्चन।
निज हृदय कमल में तिष्ठाने, प्रभु करते हैं तव आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

दोहा– **जल की धारा दे रहे, चरणों में हे नाथ !।**
जन्म–जरादि नाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन चरणों चर्चने, आए हम हे नाथ !
भव आताप विनाश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत के प्रभु, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाने चरण, पूजा करें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर आए साथ।
कामबाण विध्वंश हों, तव चरणों में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
क्षुधा रोग विध्वंश हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का अनुपम दीप यह, हाथों लिए प्रजाल।
मोह अंध का नाश हो, चरण झुकाते भाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधमय धूप यह, खेते अपरम्पार।
अष्ट कर्म का नाश हो, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ा रहे हम भाव से, ताजे फल रसदार।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, भवदधि पावैं पार।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, लेकर द्रव्य अनेक।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त शुभ, यही भावना एक।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविवार व्रत के दिना, करें पार्श्व गुणगान।
जलधारा देते चरण, पाने सौख्य महान्।।

(शांतये शांतिधारा)

अर्पित करते चरण में, पुष्पों का यह हार।
गुण गाने से पार्श्व के, मिले मोक्ष उपहार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा– **अर्चा के शुभ भाव से, वन्दन करें त्रिकाल।**
रविव्रत पूजा की यहाँ, गाते हम जयमाल।।

उपसर्ग परिषह में तुमने, अतिशय समता को धारा है।
अतएव पार्श्व प्रभु भव्यों ने, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।।
ओले शोले पत्थर पानी, दुष्टों ने तुम पर बरसाए।
तव श्रेष्ठ तपस्या के आगे, सारे शत्रु पद सिर नाए।।
तुमने तन चेतन का अन्तर, प्रत्यक्ष रूप से दिखलाया।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, निश्चय स्वरूप प्रभु ने पाया।।
यह संयम की शक्ति मानो, उपसर्ग प्रभुजी झेले हैं।
जो ध्यान शक्ति की ढाल लिए, हर बाधाओं से खेले हैं।।
सब राग–द्वेष तुमसे हारे, उन पर तुमने जय पाई है।
हम समता रस का पान करें, मन में यह आन समाई है।।
तुम सर्व शक्ति के धारी प्रभु, जीवों को निज सम करते हो।
जो दीन–दुःखी द्वारे आते, उनके सारे दुःख हरते हो।।
एक सेठ मतिसागर जानो, जो मन से अति दुःखयारा था।
जो अशुभ कर्म के कारण से, निज सुत वियोग का मारा था।।
पा पुत्र एक शुभ होनहार, जो परदेशों में भटका था।
सुद भूल गया था निज गृह की, जो माया–मोह में अटका था।।
तब सेठ ने रविव्रत पूजा कर, शुभ पुण्य सुफल को पाया था।
तव पुत्र प्राप्त करके अपना, अतिशय सौभाग्य जगाया था।।
जो शरण प्रभु की पाते हैं, अतिशय शुभ पुण्य कमाते हैं।
व्रत धारण करके पूजा कर, बहु सौख्य सम्पदा पाते हैं।।
जो पूजा करने आते हैं, वह खाली हाथ न जाते हैं।
वह अर्चा करके भाव सहित, सब मनवांछित फल पाते हैं।।
उपसर्ग कमठ ने कीन्हा जब, धरणेन्द्र स्वर्ग से आया था।

फण फैलाया था पद्मावती ने, प्रभु को उस पर बैठाया था।।
फण का शुभ छत्र बनाकर के, क्षण में उपसर्ग नशाया था।
भक्तों ने भक्ति वश होकर, अपना कर्त्तव्य निभाया था।।
था अन्जन चोर अधम पापी, उसने जिनवर को ध्याया था।
ऋद्धि उसने पाई अतिशय, फिर स्वर्ग सुपद को पाया था।।
सीता की अग्नि परीक्षा में, अग्नि को कमल बनाया था।
सूली का सेठ सुदर्शन ने, अतिशय सिंहासन पाया था।।
जब नाग–नागिनी दुःखी हुए, तब प्रभु ने संकट हारा था।
द्रोपदी के चीरहरण को भी, जिनवर ने शीघ्र सम्हारा था।।
होकर अधीर प्रभु चरणों में, यह पूजा करने आए हैं।
अपने भावों के उपवन से, यह भाव सुमन शुभ लाए हैं।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह अनुपम श्रेष्ठ निराला है।
जो भवि जीवों के लिए शीघ्र, शुभ पदवी देने वाला है।।

दोहा– रविव्रत को जिन पार्श्व की, पूजा करें विशेष।
सौख्य सम्पदा प्राप्त कर, पावें जिन स्वदेश।।
रविव्रत के दिन पार्श्व को, पूजें जो भी लोग।
सुख शांति आनन्द पा, पावें शिव का योग।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरणी छंद

रविव्रत के दिन को, करें जो पूजा भाव से।
श्री पारस जिन को, सदा ही ध्यावें चाव से।।
बने ज्ञानी ध्यानी, जगे सौख्य तिनके।
बने पारस वह भी, जजैं पद पार्श्व जिनके।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री बाहुबली पूजा

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

स्थापना

कर्म घातिया नाशे स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी।
एक वर्ष का ध्यान लगाया, अतिशय केवलज्ञान जगाया।।
बाहुबली बाहुबलधारी, बने विशद क्षण में अविकारी।
उनकी महिमा को हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
सिंहासन निज हृदय बनाया, जिस पर प्रभुजी को पधराया।
हमने निर्मल भाव बनाए, आह्वानन करने हम आए।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ताटंक छंद

काल अनादि से इस जग में, मोहित होकर किया भ्रमण।
जन्म-जरा के नाश हेतु हम, करते हैं यह जल अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय भोगों में रच-पचकर, भवसागर में किया भ्रमण।
भवआताप मिटाने को हम, करते हैं चंदन अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अविरति योग कषायों, से कर्मों का किया सृजन।
अक्षय अखण्ड पद पाने को हम, अक्षत यह करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम कषायों ने भव-भव में, कीन्हा है भारी कर्षण।
कामबाण विध्वंश हेतु हम, सहस्र पुष्प करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय भोग की आकांक्षा से, सर्व जगत् में किया भ्रमण।
क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य सरस करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादी मोह कषायों से, न प्रकट हुआ सम्यक्दर्शन।
अब निज परिणति में रमण हेतु, यह दीप ज्योति करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की ज्वाला को, हम कभी नहीं कर सके शमन।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप सुगंधित है अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल को फल माना, अरु पुण्य पाप में किया रमण।
अब महामोक्षफल पाने को, यह फल करते पद में अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म-मरण।
अब पद अनर्घ हेतु प्रभु, यह अर्घ्य श्रेष्ठ करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहुबली का बाहुबल, जग में रहा महान्।
जलधारा देते चरण, पाने पद निर्वाण।।

(शांतये शांतिधारा)

पुष्पांजलि करने चरण, भाव पुष्प ले हाथ।
अर्पित करते भाव से, झुका रहे पद माथ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल।।

(शंभू छन्द)

सुर-असुर-खगाधिप योगीश्वर, मुनि जिन की महिमा गाते हैं।
हे बाहुबली ! तव चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

तुम महाबली हो कर्मदली, चक्री का मान गलाया है।
संसार असार जानकर के, तुमने संयम अपनाया है।।
तुमने तन-चेतन के अंतर, को जान स्वभाव जगाया है।
तन से ममत्व का त्याग किया, यह भेद ज्ञान प्रगटाया है।
तुम मात सुनंदा से जन्मे, प्रभु आदिनाथ के पुत्र कहे।
प्रभु कामदेव थे प्रथम श्रेष्ठ, शुभ चक्रवर्ती के भ्रात रहे।।
सवा पाँच सौ धनुष देह शुभ, हरित वर्ण से शोभामान।
नील कुलाचल सम स्थिर प्रभु, नील गिरि सम आभावान।।
तेज परमाणु जग के, जिनसे रचा शरीर महान्।
अतुल वज्र सम धीरज नीरज, वीरबली अतिशय बलवान।।
बाल्यावस्था में वृद्धि कर, बने श्रेष्ठ गुण के आधार।
बल बुद्धि वैभव के धारी, बने जहाँ में अपरम्पार।।
पोदनपुर के राजा का पद, बाहुबली को दिए जिनेश।
नगर अयोध्या का स्वामी पद, भरतेश्वर को दिया विशेष।।
चक्ररत्न पाये भरतेश्वर, पुण्योदय से अपरंपार।
षट् खंडों पर विजयश्री में, वर्ष बिताए साठ हजार।।
बाहुबली ने हार न मानी, युद्ध हुए तब उनसे तीन।
दृष्टि मल्ल जल युद्ध का निर्णय, कीन्हें मंत्री ज्ञान प्रवीण।।
दृष्टि युद्ध अरु नीर युद्ध में, चक्रवर्ती ने मानी हार।
मल्ल युद्ध करने फिर दोनों, उसी समय हो गये तैयार।।
बाहुबली ने भरतेश्वर को, अधर उठाया अपने हाथ।
शक्तिहीन हुआ भरतेश्वर, जो था छह खण्डों का नाथ।।
चक्रवर्ति ने चक्र चलाया, विफल हुआ उसका भी वार।
बाहुबली ने सोचा तब ही, है अनित्य सारा संसार।।

राज्य सौंपकर भरतेश्वर को, अष्टापद पर गये कुमार।
महाव्रतों को धारण करके, ध्यान किया होकर अविकार।।
खड़ा हुआ मैं जिस धरती पर, भरत का है उस पर अधिकार।
यह विकल्प आता था मन में, बाहुबली को बारंबार।।
वामी बनी चरण में अतिशय, तन पर बेलें चढ़ी महान्।
क्रूर जंतुओं ने अंगों पर, बना लिया अपना स्थान।।
सिर के केश बढ़े थे भारी, उनमें पक्षी बसे अपार।
कानों में भी बना घौंसला, पक्षी करते थे किलकार।।
धन्य-धन्य इस अचल ध्यान का, धन्य हुए मुनिवर अविकार।
वीतराग गुरुओं की महिमा, कही गई है अपरम्पार।।
कर्म नाशकर आदि जिन से, पहले कीन्हें मोक्ष प्रयाण।
सिद्धशिला पर बना लिए प्रभु, अपना स्थाई स्थान।।
यही भावना रही हमारी, चरणों रहे हमारा ध्यान।
संयम को पाकर के हम भी, इस भव से पावें निर्वाण।।

चौपाई– श्रवणबेलगोला में जानो, विंध्यगिरि अनुपम पहिचानो।
प्रतिमा सत्तावन फुट भाई, है प्रसिद्ध जग में सुखदाई।।
खड्गासन है अतिशयकारी, दिखती है अतिशय मनहारी।
अर्घ्य चढ़ाकर महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोह– बाहुबली भगवान की, महिमा अपरम्पार।
पूजा अर्चा कर मिले, जग में सौख्य अपार।।

।। इत्याशीर्वादः।।

रक्षाबन्धन पर्व पूजा

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

स्थापना

श्री अकम्पनाचार्य आदि शुभ, सप्त शतक मुनिवर ज्ञानी।
स्वपर भेद विज्ञान जगाने, वाले थे अतिशय ध्यानी।।
यज्ञ किए मंत्री बलि आदि, करने को उपसर्ग महान्।
विष्णु कुमार मुनिवर के द्वारा, किया गया उपसर्ग निदान।।
वात्सल्य का पर्व कहाया, धर्म सुरक्षा का त्यौहार।
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन, हुआ जगत में मंगलकार।।
परम दिगम्बर मुद्राधारी, मुनियों का करते गुनगान।
भक्ति से प्रेरित होकर हम, निज उर में करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शम्भू छंद

हमने अनादि से कर्मों के, बन्धन करके बहु दुःख सहे।
हम राग द्वेष की परिणति से, तीनों लोको में भटक रहे।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों की रही कामना, जिससे जग में भ्रमण किया।
भव संताप मिटाने का न, हमने अब तक यतन किया।।
नाश होय संसार ताप मम्, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय कषायों में रत रहकर, निज पद को न पाया है।
क्षण भंगुर, जीवन पाकर के, तीनों लोक भ्रमाया है।।
अक्षय पद पाने को अभिनव, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महामद को पीकर के, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
काम बाण से बिद्ध हुऐ हम, अब तक चेत न पाए हैं।।
काम वासना नाश हेतु यह, पुष्पित पुष्प चढ़ातें हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि काम–बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हर विषय भोग की ज्वाला में, सदियों से जलते आए हैं।
आशाएँ पूर्ण न हो पाती, हमने कई जन्म गवाएँ हैं।।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, अतिशय नैवेद्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्या जग में, जिसमें जग जीव भ्रमाए हैं।
अतिशय प्रकाश का पुञ्ज जीव, अब तक समझ न पाए हैं।।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, यह मनहर दीप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणादि कर्मों ने, इस जग में जाल बिछाया है।
हम फँसे अनादि से उसमें, छुटकारा न मिल पाया है।।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, अग्नि में धूप जलाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप का फल पाकर, हम उसमें रमते आए हैं।
हम भटक रहे है निज पद से, न अक्षय फल को पाए हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, चरणों फल सरस चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत है जीव अनादि से, हम अब तक जान न पाए हैं।
तन में चेतन का भाव जगा, उसको अपनाते आए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतु, अतिशय यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, के पद शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनि अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **जलधारा देते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।**
झुका रहे हम भाव से, चरण कमल में माथ।।

शान्तये शांतिधारा.....

करते हैं पुष्पाञ्जलि, लेकर पुष्पित फूल।
गुरु भक्ति की भावना, बनी रहे अनुकूल।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– वात्सल्य का पर्व यह, जग में मंगलकार।
गाते हैं जयमालिका, करके जय जयकार।।

उज्जयिनी के नृप श्री वर्मा, के मंत्री थे चार विशेष।
बलि, प्रहलाद, बृहस्पति, नमुचि, मिथ्यावादी रहे अशेष।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक थे बहुगुणवान।
दर्शन करके नृप श्री वर्मा, प्रमुदित मन में हुआ महान्।।
अशुभ निमित्त जानकर गुरु ने, मौन का दीन्हा था आदेश।
शिरोधार्य करके मुनियों ने, पालन कीन्हा जिसे विशेष।।
श्रुत सागर मुनि सुन न पाए, जो थे ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।
चर्या करके लौट रहे थे, मंत्री करते तब अपमान।।
अज्ञानी होते मुनि सारे, जानें क्या तत्त्वों का सार।
सुनकर मुनि मंत्री से बोले, तुम क्यों करते गलत प्रचार।।
वाद–विवाद हुआ मुनिवर से, सारे मंत्री माने हार।
अपमानित होकर रात्रि में, मुनि पर कीन्हे खड्गप्रहार।।
कीलित किया क्षेत्र रक्षक ने, सर्व मंत्रियों को उस हाल।
राजा ने क्रोधित हो करके, दीन्हा क्षण में देश निकाल।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मंत्री, पद्मराय राजा के पास।
सर्व मंत्रियों ने मिलकर के, शत्रु दल का किया विनाश।।
तभी मंत्रियों को मुंह मांगा, राजा ने दीन्हा वरदान।
जब चाहेंगे ले लेंगे हम, वचन लिए राजा ने मान।।

श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, करके पहुँचे वहाँ विहार।
संघ देख मंत्रिन् के मन में, भय का रहा न कोई पार।।
कुटिल भाव से मंत्री पहुँचे, पद्मराय नृप के दरबार।
अष्ट दिवस का राज्य दीजिए, मानेंगे हम सब आभार।।
भीषण आग जलाए मंत्री, यज्ञ रचाए विविध प्रकार।
दान किमिच्छित देते सबको, कीन्हा चारों ओर प्रचार।।
धरणी भूषण पर्वत पर मुनि, श्रुतसागर करते थे ध्यान।
कम्पित देख गगन में तारा, मुनि को आश्चर्य हुआ महान्।।
पुष्पदन्त क्षुल्लक को भेजा, विष्णु कुमार मुनि के पास।
मुनियों पर उपसर्ग हुआ है, मुनि को हुआ था ये आभास।।
श्रेष्ठ विक्रिया ऋद्धि मुनिवर, तप से सिद्ध हुई है खास।
यह उपसर्ग आपके द्वारा, हो सकता है पूर्ण विनाश।।
हस्तिनागपुर पहुँचे मुनिवर, वात्सल्य का भाव विचार।
बटुक विप्र का भेष धारकर, मुनि पहुँचे करने उपकार।।
बलि आदि मंत्री के आगे, बटुक ने मांगा यह वरदान।
तीन पैढ़ भूमि दो हमको, तुम हो दानी श्रेष्ठ महान्।।
वचन बद्ध करके मंत्री को, मुनिवर ने फिर रक्खा पैर।
दो पग में सब धरती मापी, तीजे की अब रही न खैर।।
बलि आदि मंत्री झुक जाते, मुनिवर के चरणों में आन।
हमें क्षमा करदो हे मुनिवर, हमसे गलती हुई महान्।।
विष्णु कुमार मुनि की बोले, प्राणी सारे जय–जयकार।
करके यह उपसर्ग दूर गुरु, कीन्हा है हम पर उपकार।।

नशते ही उपसर्ग सभी नें, मुनियों को दीन्हा आहार।
बलि आदि भी मुनि संघ की, भाव सहित बोले जयकार।।
रक्षासूत्र बाँध हाथों में, सबने कीन्हा यही विचार।
धर्म की रक्षा कर हमको भी, करना है जग का उपकार।।
साधर्मी से वात्सल्य का, भाव जगायेंगे हम लोग।
कहीं किसी भी रूप में हमको, मिले धर्म का जब संयोग।।
श्रावण शुक्ला पूनम का दिन, पर्व बना यह मंगलकार।
वात्सल्य का है प्रतीक जो, सम्यक् दर्शन का आधार।।
विष्णु कुमार मुनि ने फिर से, व्रत कीन्हें थे अंगीकार।
कर्मों की सेना के ऊपर, कीन्हा मुनिवर ने अधिकार।।
मुनियों ने कीन्हा तप भारी, निज परिणामों के अनुसार।
कर्म नाशकर कर स्वर्ग मोक्ष पद, पाये मुनिवर अपरम्पार।।
धर्म भावना जगे ह्दय में, पाप रहें हमसे अतिदूर।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण, से ह्दय भरे मेरा भरपूर।।
रक्षा बन्धन पर्व धर्म की, रक्षा का त्यौहार महान्।
'विशद' भाव से करते हैं हम, मुनियों का अतिशय गुणगान।।
श्री अकम्पनाचार्य आदि मुनि, सप्त शतक के चरण नमन्।
हैं उपसर्ग निवारक महामुनि, विष्णु कुमार के पद वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतक एवं विष्णु कुमार मुनिभ्या जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – वात्सल्य का पर्व यह, रक्षाबन्धन नाम।
जिन मुनियों के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

परम पूज्य आचार्य
श्री 108 विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, ह्दय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् ह्दय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्ङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क

पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, गुरु बने आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज।।
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम।।

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन–जन को तुम लगते प्यारे।।
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है।।
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है।।
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना।।
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन–जन को दे शीतल छाया।।
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर–घर दीप जले सुखदाई।।

गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा।।
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर।।
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए।।
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया।।
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो।।
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर।।
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी।।
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।।
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कइ विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले।।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ति भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी।।

~

जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ति से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें।।
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं।।
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं।।
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते।।
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे।।
भक्ति से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें।।

दोहा- 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान।।
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष।।

– ब्र. आरती दीदी

H¥$mn Am`mH$s ~Zr aho Vmo h_Am`Jo ~‹T>Om` |JoŸ&
_wpíH$b H$moB© ^r Am`OmE Cggo Z K~amE|JoŸ&&
Amerdm©X Mn{h`o h_H$mo Am¡a Z H$moB© MmhV h¡Ÿ&
BgH$m {deX ghmamnmH$a _S{Ob VH$ ~‹T>Om` |JoŸ&&

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...

श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...

शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोहे मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

~

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

तर्ज : आज करें हम .....

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु हम बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर–नारी सब नाचे गाये, जय–जयकार लगाए।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष पराप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर–हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

।। इति समाप्तम् ।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ। प्रभू कर दो भव से पार आज थारी...
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।
जन्मे है काशीराज– आज थारी..... ।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज– आज थारी आरती..... ।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार– आज थारी आरती..... ।।3।।
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार– आज थारी..... ।।4।।
'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन–जन के सुखकार– आज थारी आरती..... ।।5।।

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज : इह विधि मंगल...

नव कोटि से आरति कीजे, नवदेवों की शरण गहीजे।
प्रथम आरती अर्हत् थारी, कर्मघातिया नाशनकारी।। नवकोटि...।।
द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवे भगवंता।। नवकोटि...।।
तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की।। नवकोटि...।।
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की।। नवकोटि...।।
पाँचवीं आरती मुनि संघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की।। नवकोटि...।।
छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की।। नवकोटि...।।
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की।। नवकोटि...।।
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी।। नवकोटि...।।
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की।। नवकोटि...।।
आरती करके वन्दन कीजे, शीष झुकाकर आशिष लीजे।। नवकोटि...।।

~

महावीर भगवान की आरती

तर्ज – तुमसे लागी लगन ....

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण ज्ञानधारी
हम तो आरती उतारें तुम्हारी
भाव भक्ति करें, कष्ट सारे हरें-धर्म धारी,
पार नैया लगाओ हमारी

कुण्डलपुर में प्रभु जन्म पाये, तीनों लोकों में शुभ हर्ष छाये।
इन्द्र आये तभी, दर्श कीने सभी-मंगलकारीङ्क
हम तो आरती ....ङ्क1ङ्क

भोग जग के नहीं जिनको भाए, योग धारण में मन को लगाए।
आप त्यागी बने, वीतरागी बने - ब्रह्मचारीङ्क
हम तो आरती ....ङ्क2ङ्क

कर्म घाती सभी तुम नशाए, ज्ञान केवल प्रभु जी जगाए।
आए पावापुरी, पाए मुक्ति श्री, निर्विकारीङ्क
हम तो आरती ....ङ्क3ङ्क

भक्त आये हैं चरणों तुम्हारे, आशा लेकर के आये हैं द्वारे।
आशा पूरी करो, कर्म सारे हरो, संकटहारीङ्क
हम तो आरती ....ङ्क4ङ्क

शीश चरणों में सेवक झुकाए, 'विशद' आशीष पाने को आए।
वीर बन जायें हम, कोई होवे न गम, उम्र सारी ङ्क
हम तो आरती ....ङ्क5ङ्क

।। इति समाप्तम् ।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

~

प.पू. क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य	31. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह	32. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
3. धर्म की दस लहरें	33. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
4. विराग वंदन	34. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
5. बिन खिले मुरझा गये	35. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
6. जिंदगी क्या है ?	36. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
7. धर्म प्रवाह	37. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
8. भक्ति के फूल	38. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)	39. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित	40. श्री श्रुत स्कंध विधान
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद	41. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद	42. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद	43. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद	44. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद	45. श्री याग मण्डल विधान
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद	46. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
17. संस्कार विज्ञान	47. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
18. विशद स्तोत्र संग्रह	48. विशद पञ्च विधान संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित	49. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
20. जरा सोचो तो !	50. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद	51. श्री विशद त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2	52. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
23. जीवन की मन: स्थितियाँ	53. श्री शीतलनाथ विधान
24. आराध्य अर्चना, संकलित	54. णमोकार मंत्र विधान
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह	55. कर्मदहन विधान
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)	56. समवशरण विधान
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2	57. सहस्रनाम विधान
28. श्री विशद नवदेवता विधान	58. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
29. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान	
30. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान	